"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–09 वर्ष–01, जनवरी 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

सभी देशवासियों को "गणतंत्र दिवस" की हार्दिक शुभकामनाएं

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-09 वर्ष-01, संवत्सर 2076 जनवरी 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853120

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता	पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	03
सम्पादकीय	04
बच्चों को बनायें 'संस्कार प्रूफ'	05
कवि की कलम से	06
लेने नहीं देने से बढ़ती है समृद्धि	07
अत्याचार के खिलाफ उठायें अवाज	08
स्वास्थ्य चर्चा	09
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां	10-15
विज्ञापन	16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

परमेश्वर की स्तुति का पार पाना असम्भव

वेद मंत्र

ओ३म् तुंजेतुंजे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वजिण्रः। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्।।

-ऋ० १।७।७ :, अथर्व० २०।७०।१३

ऋषिः-**मधुच्छन्दाः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

विनय

भगवान् ने मुझपर कितनी कृपा की है, इसका वर्णन नहीं कर सकता। मेरे कल्याण के लिए जब जिस वस्तु की आवश्यकता हुई, तभी वह वस्तु कहीं से आ मिली। वह कल्याणस्वरूपिणी माता पुत्र की एक-एक आवश्यकता को पूर्ण रूप से जानती हुई चिन्ता-पूर्वक देती जाती है। ओह, उसकी करूणा अपार है! भगवान् के इस जगत में रहनेवाले बहुत-से मनुष्य न जाने क्यों सन्तोष का परित्याग किये रहते हैं और घबराते हैं। वे या तो प्रत्येक प्राणी को दी गई भगवान् की स्वाभाविक देन का मूल्य नहीं समझते या वे अकृतज्ञ हैं। पहली बात ही ठीक समझी जा सकती है, पर मैं तो यही कहूंगा और बिना थके कहता जाउंगा कि पाप से हटाने वाले उस परमैश्वर्ययुक्त इन्द्र भगवान् ने मुझे निहाल कर दिया है, मुझे पाप और दुःख के गर्त से उबारा है। एक के पश्चात् एक ऐसा आन्तरिक सुख मिलता गया है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। जब-जब उसकी ये देनें याद आती हैं तो आनन्दाश्रुओं से मैं गद्‌गद हो जाता हूं और मेरे मुख से कृतज्ञता-भरी वाणी से उसके गुणों के गान निकलने लगते हैं:, उसके स्तोत्र गाता जाता हूं, परन्तु तृप्ति नहीं होती। ओह, यह अपूर्ण वाणी हृदय के अनुभूत भाव को पूर्णतया कहां प्रकट कर सकती है! फिर भी मैं पूर्णता की आशा में बार-बार गाता जाता हूं- गाता जाता हूं, परन्तु स्तुति कभी पूरी नहीं होती। यह कभी अनुभव नहीं हो पाता कि उसकी जी-भरके स्तुति हो गई। ओह, उसकी स्तुति का कौन पार पा सकता है! ''अपार तेरी दया, अपार तेरी दया!''

शब्दार्थ

तुंजे तुंजे- एक-एक दान पर मैं **वज्रिणः इन्द्रस्य**- पापवर्जक इन्द्र की **ये उत्तरे स्तोमाः**- अधिक-अधिक स्तुति करता जाता हूं, उन सबसे भी **अस्य सु स्तुतिम्**- उसकी स्तुति का पार **न विन्धे**- नहीं पाता हूं।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा आदि हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com **09719910557**

सम्पादकीय | गणतंत्र यानि लोकतंत्र, जनतंत्र व प्रजातंत्र

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

गणतंत्र दिवस भारत के सबसे महत्वपूर्ण तीन राष्ट्रीय पर्वों में से एक है, यही कारण है कि इसे हर जाति तथा संप्रदाय द्वारा काफी सम्मान और उत्साह के साथ मनाया जाता है। भारत में रह रहे लोगों और साथ ही विदेश में भी रहने वाले भारतीयों के लिए गणतंत्र दिवस का उत्सव मनाना बहुत ही सम्मान की बात है। भारतीय गणतंत्र दिवस सभी भारतीयों के लिए बहुत ही खास अवसर होता है, क्योंकि यह दिन हमें अपने देश में स्थापित गणतंत्र और संविधान के महत्व को समझाता है। हमारे देश का संविधान तथा इसका गणतांत्रिक स्वरुप ही हमारे देश को कश्मीर से कन्याकुमारी तक जोड़ने का कार्य करता है। भारत की आजादी के साथ-साथ संविधान का होना बहुत ही जरूरी था। स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग, उनके कठोर संघर्ष को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। हमारी आजादी के लिए उन्होने बहुत सी परेशानियों को सहा है। यह वह दिन है जब हमारा देश विश्व मानचित्र पे एक गणतांत्रिक देश के रुप में स्थापित हुआ था। इसके साथ ही यह वह दिन भी है जब भारत अपने सामरिक शक्ति का प्रदर्शन करता है, जो किसी को आतंकित करने के लिए नही अपितु इस बात का संदेश देने के लिए होता है कि हम अपनी रक्षा करने में सक्षम हैं। गणतंत्र को लोकतंत्र, जनतंत्र व प्रजातंत्र भी कहते हैं, जिसका अर्थ है - प्रजा का राज्य या प्रजा का शासन। जिस दिन देश का संविधान लागू हुआ था, उसी दिन के महत्त्व को समझते हुए उसी दिन को गणतंत्र दिवस कहा गया। हमारे देश का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था, इसीलिए इस तारीख को ही गणतंत्र दिवस कहा गया।

लंबे संघर्ष के बाद भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों ने अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत को आजादी दिलाई। जब भारत के आजाद होने के बाद भी भारत पर किसी और देश का संविधान लागू था, और सभी उसी के आधार पर शासन चला रहे थे। लेकिन देश के कुछ महान लोगों को आभास हुआ की देश की प्रगति के लिए अपना संविधान होना अति आवश्यक है। कुछ महान विद्वानों की देख रेख में एक ड्राफ्टिंग कमेटी को 28 अगस्त 1947 की मीटिंग में भारत के स्थायी संविधान का प्रारुप तैयार करने के लिए कहा गया था। डॉ. बी.आर.अंबेडकर की अध्यक्षता में 4 नवंबर 1947 को भारतीय संविधान के प्रारुप को सदन में रखा गया। लगभग 2 साल 11 महीने और 18 दिनों के बाद ये पूरी तरह से तैयार हो पाया था। और आखिरकार इंतजार की घड़ी 26 जनवरी 1950 को खत्म हो गई। और इसको लागू कर दिया गया। भारत ने खुद को एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रुप में घोषित कर दिया।

सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा।
हम बुलबुले हैं इसके ये गुलसिता हमारा।।

सभी देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

बच्चों को बनायें ''संस्कार प्रूफ''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा0 अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

आज अधिकतर लोगों का कहना है कि बच्चों को टीवी ने बिगाड़ दिया है। यह बहुत ही विचारणीय प्रश्न है, हमें थोड़ी सहदयता से विचार करना पड़ेगा। हमें डर है कि वातावरण इतना अश्लील, इतना उत्तेजक हो गया है, जिसमें बच्चा प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। यह ठीक है परन्तु पूर्ण सत्य नहीं है। आपने बम प्रूफ, बुलेट प्रूफ, वाटर प्रूफ आदि नाम तो सुने ही होगें। जहां पतली सी सुई मनुष्य को रूला सकती है वहां 'बुलेट प्रुफ जाकेट' पहनने वाले पर गोली भी असर नहीं करती है। जो सैल थोड़ी नमी पाने पर अपना प्रभाव खो देता है वो 'वाटर प्रूफ' होने पर पानी में पड़ा रहने पर भी पानी का प्रभाव अपने ऊपर नहीं आने देता है। बम प्रूफ पर बम का भी असर नहीं होता है। परन्तु उसी व्यक्ति के बच्चे पर टीवी का असर हो रहा है। समाज उसे प्रभावित कर रहा है। वातावरण का असर उस पर हो रहा है। गोली का असर शरीर पर नहीं हुआ, पानी का प्रभाव सैल पर नहीं हुआ क्यों? क्योंकि वे प्रूफ बना दिये गये। हमने अपने बच्चों को टेलीविजन प्रूफ, सेक्सप्रूफ, हिंसा प्रूफ बनाया ही नहीं। प्रश्न हो सकता है कि क्या बच्चों को टीवी प्रूफ, सेक्स प्रूफ, हिंसा प्रूफ बनाया जा सकता है? तो इसका उतर है अवश्य। बच्चों को प्रूफ बनाया जा सकता है कैसे? संस्कारों के माध्यम से, विचारधारा के माध्यम से रूचियों का विकास करने से बच्चों को प्रूफ बनाया जा सकता है, वैदिक मनीषियों, ऋषि मुनियों ने संस्कार प्रणाली की आधारशिला को इसी लिये रखा था, बच्चा जब मां के पेट में पूर्ण विकास को प्राप्त कर जन्म लेता है जब तक तीन संस्कारों, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन की प्रक्रिया पेट के अन्दर चल रही थी। अब बच्चा बाहर की दुनियां में आ गया तो बाहर की दुनिया में उसे संस्कारित करना है। क्योंकि बाहर के समाज का वातावरण उसके विपरीत होगा। ऐसे समाज से इसका परिचय होगा और उसमें ही उसे रहने के लिये बाध्य होना पड़ेगा, क्या यह समाज उसे प्रभावित नहीं करेगा? अवश्य करेगा। जब तक आप उसे संस्कार रूपी प्रूफ जाकेट (रक्षा कवच) नहीं प्रदान करोगे। इसी कारण इसी क्रम मे हमारी संस्कृति में बच्चे के पैदा होते ही जातकर्म, नामकरणादि संस्कारों के माध्यम से प्रूफ जाकट पहनाने का विधान किया है। इसे पहनकर जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त अर्थात् गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टी संस्कार तक का प्रावधान किया गया है।

मनुष्य की सुगन्ध क्या है ? अच्छे कामों का फैलाव ही मनुष्य की सुगन्ध हो सकती है। यही मार्ग कष्टों, दु:खों व बन्धनों से छूटने का है। इन सब से अत्यन्त छुटकारा होने पर मनुष्य अमृत (अमरपद) प्राप्त कर लेता है। मनुष्य के अन्दर छिपी हुई चमक बाहर आ जाती है और हीरे के समान चमक-दमक वाला बन जाता है। संस्कार रूपी भट्टी में तपकर। संस्कारों की वर्तमान कालीन प्रासंगिकता यही है कि हम यदि आज के परिपेक्ष्य में चाहते हैं कि समाज सुन्दर बने, माता-पिता के ऋण से उऋण हो, बच्चे अति श्रेष्ठ, बुद्धिमान, शुभ, गुण, कर्म, स्वभाव वाले हो, बच्चे स्वस्थ हों (हृदयरोग, पीलिया, कैंसर आदि रोग रहित), उनका दृष्टिकोण पवित्र हो, कोई पुण्य आत्मा आपके यहॉ जन्म ले, लड़कियों का गर्भपात न करवाऐं, बच्चे मॉ -बाप का सम्मान करने वाले हों, बच्चे अपंग न हो, आपकी और आपके बच्चों की कीर्ति फैंलें तो संस्कारों के माध्यम से श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करके माता-पिता प्रशंसा के पात्र बने। डा.होलक्रुक के शब्दों में - श्रेष्ठ सन्तान का उत्तमता से उत्पन्न करना सब से उच्च श्रेणी का काम है जो कभी इस पृथिवी पर हुआ है। हम हैरेट होसमर की प्रंशसा के पुल बॉध देते है, जिसने जेनूविया के पत्थर की मूर्ति घड़ी है परन्तु उस पुरूष या स्त्री की जितनी प्रंशसा की जाए उतनी ही थोड़ी है जो कि संस्कारों के माध्यम से संसार में श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करते है।

कवि की कलम से

गरदन मेरी उड़ाओ तुम...

धर्म की खातिर मात्र 11 वर्ष की आयु में बसन्त पंचमी पर मुसलमानों की धर्मान्धता के कारण बलिदान हो जाने वाले बालक 'वीर हकीकत राय' को समर्पित गीत

रचियता : कवि रोहित आर्य (आर्य वीर दल, दिल्ली)

वीर हकीकत बोल रहा था, मुझे नहीं समझाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।
मुसलमान बन जान बचा लूँ, न ये डर दिखलाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

ग्यारह वर्ष के बालक पर, झूठा आरोप लगाकर के,
उसको खड़ा किया सफेद खां, के आगे ले जाकर के।
सभी मुसलमाँ बोल रहे थे, इसको सजा सुनाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

उम्र देखकर नवाब बोला, तेरी जान बचा दूँगा,
बेटी से शादी करवाकर, राजा तुझे बना दूँगा,
छोड़ के अपना धर्म सनातन, मुसलमान बन जाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

मुसलमान बन गया अगर जो, क्या मैं कभी मरूँगा न,
क्या मृत्यु के आने के भय से, मैं कभी डरूँगा न।
अपनी बेहूदी बातों को, न मुझको बतलाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

मात-पिता ने भी समझाया, दुःख के आँसू पी लेंगे,
तेरी पत्नी और हम सभी, तुझे देखकर जी लेंगे,
वीर हकीकत बोला मुझको, न कमजोर बनाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

नवाब सुन लो नहीं तुम्हारी, मैं बातों में आऊँगा,
वैदिक धर्म की खातिर अपना, शीश कटाकर जाऊँगा।
छोड़ के अपनी लफबाजी को, अब जल्लाद बुलाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

देख हकीकत की आयु को, काँप उठा जल्लाद सुनो,
रोते-रोते और बिलखते, उसने किया प्रहार सुनो।
'रोहित' वीर हकीकत के, बलिदान को शीश झुकाओ तुम,
गरदन मेरी उड़ाओ तुम, गरदन मेरी उड़ाओ तुम।।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका

श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

की अमृतमयी वाणी में

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

लेने नहीं देने से बढ़ती है समृद्धि

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

एक भिखारी एक दिन सुबह अपने घर के बाहर निकला। त्यौहार का दिन है। आज गाँव में बहुत भिक्षा मिलने की संभावना है। वो अपनी झोली में थोड़े से चावल दाने डाल कर, बाहर आया। चावल के दाने उसने डाल लिये हैं अपनी झोली में, क्योंकि झोली अगर भरी दिखाई पड़े तो देने वाले को आसानी होती है, उसे लगता है कि किसी और ने भी दिया है। सूरज निकलने के करीब है। रास्ता सोया है। अभी लोग जाग ही रहे हैं। मार्ग पर आते ही सामने से राजा का रथ आता हुआ नजर आता है। सोचता है आज राजा से अच्छी भीख मिल जायेगी, राजा का रथ उसके पास आकर रूक जाता है। उसने सोचा धन्य हैं मेरा भाग्य ! आज तक कभी राजा से भिक्षा नहीं माँग पाया, क्योंकि द्वारपाल बाहर से ही लौटा देते हैं। आज राजा स्वयं ही मेरे सामने आकर रूक गया है। भिखारी ये सोच ही रहा होता है अचानक राजा उसके सामने एक याचक की भाँति खड़ा होकर उससे भिक्षा देने की मांग करने लगता है। राजा कहता है कि आज देश पर बहुत बड़ा संकट आया हुआ है, ज्योतिषियों ने कहा है इस संकट से उबरने के लिए यदि मैं अपना सब कुछ त्याग कर एक याचक की भाँति भिक्षा ग्रहण करके लाऊँगा तभी इसका उपाय संभव है। तुम आज मुझे पहले आदमी मिले हो इसलिए मैं तुमसे भिक्षा मांग रहा हूँ। यदि तुमने मना कर दिया तो देश का संकट टल नहीं पायेगा इसलिए तुम मुझे भिक्षा में कुछ भी दे दो। भिखारी तो सारा जीवन माँगता ही आया था कभी देने के लिए उसका हाथ उठा ही नहीं था। सोच में पड़ गया की ये आज कैसा समय आ गया है, एक भिखारी से भिक्षा माँगी जा रही है, और मना भी नहीं कर सकता। बड़ी मुशकिल से एक चावल का दाना निकाल कर उसने राजा को दिया। राजा वही एक चावल का दाना ले खुश होकर आगे भिक्षा लेने चला गया। सबने उस राजा को बढ़-बढ़कर भिक्षा दी। परन्तु भिखारी को चावल के दाने के जाने का भी गम सताने लगा। जैसे-तैसे शाम को वह घर आया। भिखारी की पत्नी ने भिखारी की झोली पलटी तो उसमें उसे भीख के अन्दर एक सोने का चावल का दाना भी नजर आया। भिखारी की पत्नी ने उसे जब उस सोने के दाने के बारे में बताया तो वो भिखारी छाती पीट के रोने लगा। जब उसकी पत्नी ने रोने का कारण पूछा तो उसने सारी बात उसे बताई। उसकी पत्नी ने कहा तुम्हें पता नहीं, कि जो दान हम देते हैं, वही हमारे लिए स्वर्ण है। जो हम इकट्ठा कर लेते हैं, वो सदा के लिए मिट्टी का हो जाता है। उस दिन से उस भिखारी ने भिक्षा माँगनी छोड़ दी, और मेहनत करके अपना तथा परिवार का भरण-पोषण करने लगा। जिसने सदा दुसरों के आगे हाथ फैलाकर भीख माँगी थी अब खुले हाथ से दान-पुण्य करने लगा। धीरे-धीरे उसके दिन भी बदलने लगे। जो लोग सदा उससे दूरी बनाया करते थे अब उसके समीप आने लगे। वो एक भिखारी की जगह दानी के नाम से जाना जाने लगा।

इस कथा का सार यही है कि जिस इन्सान की प्रवृति देने की होती है उसे कभी किसी चीज की कमी नहीं होती और जो हमेशा लेने की नीयत रखता है उसका कभी पूरा नहीं पड़ता।

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

कार्यालय : 52, ताराधाम कॉलोनी, पुष्पांजलि द्वारिका के पास, पोस्ट-अडूकी, मथुरा (उ.प्र.) -281006

प्रेरक प्रसंग

अत्याचार के खिलाफ उठायें आवाज

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक बार स्वामी विवेकानंद रेल में यात्रा कर रहे थे। वह जिस कोच में बैठे थे, उसी कोच में एक महिला भी अपने बच्चे के साथ यात्रा कर रही थी। एक स्टेशन पर दो अंग्रेज अफसर उस कोच में चढ़े और महिला के सामने वाली सीट पर आकर बैठ गए। कुछ देर बाद दोनों अंग्रेज अफसर उस महिला पर अभद्र टिप्पणियां करने लगे। वह महिला अंग्रेजी नहीं समझती थी तो चुप रही। उन दिनों भारत अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेजों का भारतीयों के प्रति दुर्व्यवहार आम बात थी। धीरे-धीरे दोनों अंग्रेज महिला को परेशान करने पर उतर आए। कभी उसके बच्चे का कान उमेठ देते, तो कभी उसके गाल पर चुटकी काट लेते। परेशान होकर उस महिला ने अगला स्टेशन आने पर एक दूसरे कोच में बैठे पुलिस के भारतीय सिपाही से शिकायत की। शिकायत पर वह सिपाही उस कोच में आया भी लेकिन अंग्रेजों को देखकर वह बिना कुछ कहे ही वापस चला गया। रेल के फिर से चलने पर दोनों अंग्रेज अफसरों ने अपनी हरकतें फिर से शुरू कर दीं। विवेकानंद जी काफी देर से यह सब देख-सुन रहे थे। वह समझ गए थे कि ये अंग्रेज इस तरह नहीं मानेंगे। वह अपने स्थान से उठे और जाकर उन अंग्रेजों के सामने खड़े हो गए। उनकी सुगठित काया देखकर अंग्रेज सहम गए। पहले तो विवेकानंद जी ने उन दोनों की आंखों में घूरकर देखा। फिर अपने दायें हाथ के कुरते की आस्तीन ऊपर चढ़ा ली और हाथ मोड़कर उन्हें अपने बाजुओं की सुडौल और कसी हुए मांसपेशियां दिखाई। विवेकानंद के रवैये से दोनों अंग्रेज अफसर डर गए और अगले स्टेशन पर वह दूसरे कोच में जाकर बैठ गए।

कर्तव्य की कहानी से यही सीख है कि स्वामी विवेकानंद जी ने अपने एक प्रवचन में यही घटना सुनाते हुए कहा कि जुल्म को जितना सहेंगे, वह उतना ही मजबूत होगा। अत्याचार के खिलाफ तुरंत आवाज उठानी चाहिए ।

मैं संस्कार जागृति मिशन द्वारा किये जा रहे महान कार्यों में किस प्रकार से सहयोग कर सकता हूं?

#1 सोशल मीडिया पर प्रचार करके

संस्कार जागृति मिशन

हमारे सोशल मीडिया एकाउंट्स
से जुडकर हमारी पोस्ट को
अपने विभिन्न सोशल मीडिया पर
अधिक से अधिक प्रचारिक कर सकते हैं।

SanskarJagratiMission | #SanskarJagratiMission

स्वास्थ्य चर्चा | खांसी, जुकाम का घरेलू उपचार

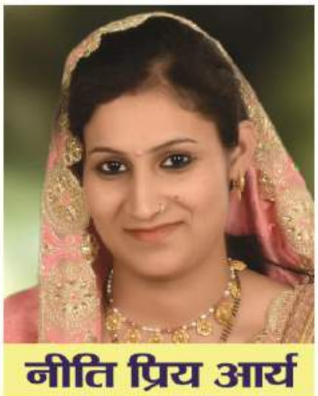

नीति प्रिय आर्य

खांसी जुकाम हर बदलते मौसम के साथ आने वाली समस्या है। मौसम के बदलते ही ज्यादातर लोग सर्दी की चपेट में आ ही जाते हैं वहीं सर्दीयों में यह समस्या और बढ़ जाती है। सर्दी, जुकाम, गले में दर्द या खांसी की यह समस्याएं बैक्टीरियल या वायरल इनफेक्शन, एलर्जी, साइनस इनफेक्शन या ठंड के कारण हो सकती है। वहीं इससे बच्चे या वे लोग ज्यादा परेशान रहते हैं जिनकी प्रतिरोधी क्षमता कम होती है। हमें से ज्यादा लोग ऐसे हैं जिन पर बदलते मौसम का असर जल्दी पड़ता है सर्दियों के शुरू होते ही कई लोगों को खासी जुकाम की परेशानी होने लगती है अक्सर यह परेशानियां घरेलू उपाय से ठीक हो जाती हैं। ठंड का मौसम जितना खुशनुमा होता है उतना ही इस मौसम में लोग सर्दी जुकाम बुखार आदि से परेशान रहते हैं ऐसे में जरूरी है कि आप अपना खास ख्याल रखें और ऐसी चीजों का सेवन करें जो आपका स्वास्थ्य सही रखें। गरम पेय पदार्थों का सेवन करें सर्दियों में ग्रीन टी के नियमित सेवन से आप ठंडक से बचे रहेंगे और जुकाम भी नहीं होगा हर दिन अदरक वाली चाय पीने से इम्युनिटी बढ़ती है दो चुटकी सोंठ पाउडर डालकर बनी चाय आपको सर्दी जुकाम से बचाती है तुलसी वाली चाय एक परफेक्ट एंटीबायोटिक होती है जो आपको रोगों से लड़ने की क्षमता देती है

खांसी जुकाम के छः घरेलू उपचार :-

1. सर्दी के मौसम में चाय की चुस्की का अपना ही मजा है। वहीं सर्दी और खांसी होने पर चाय में अदरक, तुलसी और काली मिर्च मिलाकर पीने से बहुत आराम मिलता है। इसके अलावा अदरक के टुकड़े को पानी में उबालकर पीना भी अच्छा होता है। अदरक शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है जिसे आप कम बीमार पड़ते हैं।

2. एक गिलास दूध में एक चम्मच चीनी, तुलसी की कुछ पत्तियां, अदरक और हल्दी डालकर अच्छी तरह पकाएं। जब दूध एक गिलास से एक कप हो जाए तो उसे चाय की तरह पीयें। जिससे गले में दर्द और खराश में आराम पहुंचता है।

3. खांसी में तुलसी की 5 से 6 पत्तियों के साथ लौंग, इलायची, शहद या गुड़ को मिलाकर खाने से खांसी में राहत मिलती है। इतना ही नहीं सुबह के समय तुलसी के तीन चार पत्तों को खाने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

4. खांसी या गले में खराश होने पर गर्म पानी में चुटकी भर नमक मिलाकर गरारे करने से गले को आराम मिलता है। वहीं गले में दर्द या खराश होने पर गुनगुना पानी पीने से भी गले में जमा कफ खुलता है और अच्छा महसूस होता है। दिनभर में कम से कम 3 बार गरारे करें।

5. सर्दी में पीने के लिए गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें। अगर गर्म पानी से आपकी प्यास नहीं मिटती है तो पानी को गर्म करके ठण्डा करके पीयें। गर्म पानी से सर्दी में आराम मिलता है वहीं इसका एक बड़ा फायदा यह है कि इससे आपकी अतिरिक्त चर्बी कम होती है।

6. कफ से गला, नाक बंद होने पर स्टीम जरूर लें। इससे सर्दी, जुकाम एवं खांसी में तुरंत राहत मिलती है। भाप लेने के लिए एक पतेली में पानी गरम करें, उसमें विक्स डालें और अपने चेहरे से एक निश्चित दूरी पर रखते हुए तोलिया से सर ढ़कर भाप लें।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को 'जाट गरिमा' की उपाधि से सम्मानित करते महाराजा सूरजमल स्मृति समारोह समिति के पदाधिकारीगण।

यूनिक समय के लिए वरिष्ठ पत्रकार प्रिया शशि पाराशर से वार्ता करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

मथुरा के भगत सिंह पार्क में महाराजा सूरजमल जी बलिदान के अवसर पर यज्ञ कराते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

मथुरा के भगत सिंह पार्क में महाराजा सूरजमल जी बलिदान दिवस के अवसर पर गणमान्य नागरिकों के साथ संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

वैशाली (गाजियाबाद) गायत्री परिवार द्वारा नववर्ष पर आयोजित आध्यात्मिक दिव्य सत्संग एवं यज्ञ कार्यक्रम में प्रवचन करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में बहिन जी का माल्यार्पण कर स्वागत करतीं आयोजन समिमि की महिलाएं।

वैशाली (गाजियाबाद) में आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में माल्यार्पण कर आचार्य जी का स्वागत करते आयोजकगण।

भारत सेवा न्यास की संगोष्ठी को सम्बोधित करतीं मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

भारत सेवा न्यास द्वारा आयोजित 'मेरा देश-मेरी सेवा' संगोष्ठी का दीप प्रज्ज्वल कर शुभारंभ करतीं मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में 'भारत सेवा रत्न' से बहिन जी को सम्मानित करते पूर्व विधायक हुकम चन्द्र तिवारी, कवि रमाशंकर पाण्डेय, डा.शिवराज भारद्वाज, मानवेन्द्र पाण्डव आदि।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

ब्रज तीर्थ विकास परिषद अध्यक्ष शैलजाकांत मिश्र से मुलाकात करते उपजा प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु जी, मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी, डा.कपिल प्रताप सिंह व अन्य।

उपजा प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु जी, सचिव विवेक प्रिय आर्य को जेल का निरीक्षण कराते वरिष्ठ जेल अधीक्षक शैलेन्द्र मैत्रेय जी।

मथुरा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शलभ माथुर जी से मुलाकात करते उपजा प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु जी व विवेक प्रिय आर्य जी

पंजाब केसरी के प्रधान सम्पादक स्व.अश्विनी चौपड़ा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते मिशन के पदाधिकारीगण, संतगण, पत्रकार व राजनेता।

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर यज्ञ करते मिशन के पदाधिकारीगण।

पूर्व मंत्री व सांसद बाबूलाल चौधरी, रालोद नेता प्रदीप चौधरी से मुलाकात करते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

हिन्दुस्तान आगरा • शुक्रवार • 27 दिसंबर 2019 •

जाट गरिमा की उपाधि से अर्चना प्रिय आर्य सम्मानित

मथुरा | हिन्दुस्तान संवाद

महाराजा सूरजमल स्मृति समारोह समिति द्वारा आयोजित महाराजा सूरजमल के बलिदान दिवस पर संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्षा डा. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित किया गया है। उन्होंने समिति का आभार जताते हुए कहा समाज के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं है।

महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा. अर्चना प्रिय आर्य समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में संस्कारों को पुनः स्थापित करने में प्रयासरत हैं। पूर्व में भी उन्हें कई सम्मान मिल चुके हैं। समारोह में पूर्व मंत्री सरदार सिंह, समाजसेवी एचपी सिंह परिहार, रामबाबू कटैलिया, आरबी चौधरी, चौ. विजय आर्य, डा. जय कुमार सिंह, मानवेन्द्र पांडव, दलवीर सिंह सिरोही, प्रदीप चौधरी, महेन्द्र चौधरी, डा. जेएस जाट, धर्म सिंह, लाल सिंह आर्य आदि रहे।

संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित करते समिति के पदाधिकारी।

3 सितम्बर 2019 — ब्रज गरिमा

युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटीं है डा. अर्चना प्रिय

✦ विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करने को चला रही है अभियान ✦ देश के प्रत्येक कोने तक पहुंचा रहीं है अपनी आवाज

26 दिसम्बर 2019 — राजपथ मथुरा

जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित हुयीं डा. अर्चना प्रिय

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। महाराजा सूरजमल के बलिदान दिवस पर महाराजा सूरजमल स्मृति समारोह समिति द्वारा संस्कारों के जागरण के लिए कार्य कर रही संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डा. आर्य ने आयोजन समिति का आभार जताते हुए कहा समाज के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों को भी खत्म करने का आह्वान किया। पूर्व में भी उन्हें कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है। सम्मान समारोह में पूर्व मंत्री सरदार सिंह, समाजसेवी एचपी सिंह परिहार, रामबाबू कटैलिया, आरबी चौधरी, चौ.विजय आर्य, डा.जय कुमार सिंह, मानवेन्द्र पाण्डव, दलवीर सिंह, प्रदीप चौधरी, महेन्द्र चौधरी, डा.जेएस जाट, धर्म सिंह, लाल सिंह आर्य आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

आगरा/मथुरा, 27 दिसंबर 2019 दैनिक जागरण

डॉ. अर्चना को जाट गरिमा की उपाधि

मथुरा : महाराजा सूरजमल के बलिदान दिवस पर महाराजा सूरजमल स्मृति समारोह समिति द्वारा संस्कारों के जागरण के लिए कार्य कर रही संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित किया गया। डॉ. आर्य ने आयोजन समिति का आभार जताया। कहा समाज के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों को भी खत्म करने का आह्वान किया। सम्मान समारोह में पूर्व मंत्री सरदार सिंह, समाजसेवी एचपी सिंह परिहार, रामबाबू कटैलिया, आरबी चौधरी, चौ.विजय आर्य, डॉ.जय कुमार सिंह, मानवेंद्र पांडव, दलवीर सिंह, प्रदीप चौधरी, महेंद्र चौधरी, डॉ. जेएस जाट, धर्म सिंह, लाल सिंह आर्य मौजूद रहे।

THE SEA EXPRESS आगरा, शुक्रवार, 17 जनवरी 2020

डा.अर्चना प्रिय आर्य को भारतसेवा रत्न सम्मान

मथुरा। भारत सेवा न्यास द्वारा अपने द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा०अर्चना प्रिय आर्य को समाज सेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए भारतसेवा रत्न 2020 की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आभार जताते हुए डा०आर्य ने कहा कि भारत की सेवा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जो व्यक्ति जहां भी कार्य करता है यदि वहां वह ईमानदारी व निष्ठा से उस कार्य को सम्पन्न करे तो इससे बड़ी देश सेवा और कोई नहीं हो सकती है। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा०अर्चना प्रिय आर्य समाज सुधारए नारी जागरण व उत्थानए कन्या भ्रूण हत्या व दहेज के साथ युवाओं में तेजी से घट रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करने के लिए 25 वर्ष से कार्य कर रहीं है। इससे पूर्व भी उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में भारत सेवा न्यास के संरक्षक रणवीर सिंह पाण्डवए अध्यक्ष मानवेन्द्र पाण्डवए पूर्व विधायक हुकुम चंद तिवारीए कवि डा०रमाशंकर पाण्डेयए डा०शिवराज भारद्वाजए बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष इन्द्र कुमार वशिष्ठ, शिक्षाविद् आस्था भारद्वाजए डा०सीमा मिश्राए जगत प्रशांत अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

THE SEA EXPRESS आगरा शुक्रवार, 27 दिसम्बर 2019

जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित हुई डा. अर्चना प्रिय

संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित करते समिति के पदाधिकारी।

मथुरा। महाराजा सूरजमल के बलिदान दिवस पर महाराजा सूरजमल स्मृति समारोह समिति द्वारा संस्कारों के जागरण के लिए कार्य कर रहीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डा. आर्य ने आयोजन समिति का आभार जताते हुए कहा समाज के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों को भी खत्म करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सत्यप्रिय आर्य के यहां जन्मी डा.अर्चना प्रिय आर्य महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित हैं और समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्याभ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में तेजी से बढ रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने के लिए 25 वर्षों से अभियान चला रही हैं। पूर्व में भी उन्हें कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है। सम्मान समारोह में पूर्व मंत्री सरदार सिंह, समाजसेवी एचपी सिंह परिहार, रामबाबू कटैलिया, आरबी चौधरी, चौ.विजय आर्य, डा.जय कुमार सिंह, मानवेन्द्र पाण्डव, दलवीर सिंह, प्रदीप चौधरी, महेन्द्र चौधरी, डा.जेएस जाट, धर्म सिंह, लाल सिंह आर्य आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

छोटी सी बात मथुरा | बुधवार | 02 सितम्बर 2019

विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने को अभियान

मथुरा (छोटी सी बात)। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को बचाने के लिए दिन-रात मेहनतरत महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में तेजी से बढ रहे नशाखोरी एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने के लिए एक अभियान चला रही हैं। आने वाले पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटी अर्चना इस बात से चिंतित हैं कि नई पीढ़ी में भटकाव आ गया है। उनका दावा है कि उनके द्वारा उठाये गये इस कदम से बदलाव अवश्य आयेगा।

उनके द्वारा बुलंद आवाज में कही गयी बात व मधुर स्वर में गाये गये गीतों से लोगों तक उनकी बात पहुंचती हैं। डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने समाज सुधार व जन जागरण के क्षेत्र में एक बहुत बडा मुकाम हांसिल किया है। डॉ. अर्चना बताती हैं कि लगभग 25 वर्ष पूर्व मेरे पैतृक गांव ऊंचागांव (हाथरस) में आर्य समाज द्वारा एक झलसा किया गया था, जिसमें आये विद्वानों से प्रभावित होकर ही उन्होंने यह संकल्प किया कि वह भी इस समाज सुधार के अभियान को आगे बढ़ायेंगी। इसी संकल्प के साथ वह अपनी छोटी बहिन वंदना प्रिय आर्य के साथ अपनी संस्कृति व संस्कारों से भटक रहे युवाओं को पुनः संस्कारित करने में जुट गई और संस्कार जागृति मिशन की स्थापना कर अपने संकल्प की पूर्ति में लग गयीं। डॉ. अर्चना ने जब से इस क्षेत्र में कमद रखे हैं, तब से उन्होंने पीछे मुडकर नहीं देखा। आज देश का कोई कोना ऐसा नहीं जहां तक वह अपने अभियान संस्कार जागृति मिशन की आवाज नहीं पहुंचा सकी हों। पर, यहां तक पहुंचने के लिए समाज सुधार के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने, युवाओं खासकर लडकियों में इस क्षेत्र में आगे आने के लिए हौसला देने का यह सफर उनके और परिवार के लिए आसान नहीं रहा है।

यह सच है कि जब उनके पिता आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान अपनी दोनों बेटियों को जन जागरण के इस क्षेत्र में आगे लाये तो गांव व समाज के कुछ तथाकथित लोगों को यह रास नहीं आया। लेकिन पिता ने इसकी परवाह न करते हुए जब अपनी दोनों बेटियों को ऊंची सोच, दृढ़ संकल्प और कडी मेहनत के साथ आगे बढ़ाया तो आज वह जिस मुकाम पर हैं, शायद वह बिना किसी कठोर तप के पाना असंभव है। अब गांव ही नहीं पूरे देश में जहां भी जाती हैं, वहां की लडकियों की वह आइकोन बन गई हैं। अब अपनी बेटियों को समाज सुधार के क्षेत्र में भेजने पर समाज आंख तरेर कर नहीं देखता। यह कोई नहीं कहता कि गांव-गांव घूमती हैं।

आज आगरा, 17 जनवरी 2020

डा.अर्चना प्रिय आर्य को भारतसेवा रत्न सम्मान

मथुरा। भारत सेवा न्यास द्वारा अपने द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य को समाज सेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए भारतसेवा रत्न 2020 की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आभार जताते हुए डा.आर्य ने कहा कि भारत की सेवा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जो व्यक्ति जहां भी कार्य करता है, यदि वहां वह ईमानदारी व निष्ठा से उस कार्य को सम्पन्न करे तो इससे बड़ी देश सेवा और कोई नहीं हो सकती है। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा.अर्चना प्रिय आर्य समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या व दहेज के साथ युवाओं में तेजी से घट रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करने के लिए 25 वर्ष से कार्य कर रहीं हैं।

अमर उजाला आगरा | शुक्रवार, 27 दिसंबर 2019

जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित हुईं डॉ. अर्चना प्रिय

मथुरा। महाराजा सूरजमल बलिदान दिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को जाट गरिमा की उपाधि से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में पूर्व मंत्री सरदार सिंह, समाजसेवी एच पी सिंह परिहार, रामबाबू कटैलिया आरबी चौधरी, चौ विजय आर्य, डा. जय कुमार सिंह मानवेन्द्र पाण्डव, दलवीर सिंह, प्रदीप चौधरी, महेन्द्र चौधरी डा. जेएस जाट, धर्म सिंह, लाल सिंह आर्य आदि मौजूद रहे। संवाद

16 जनवरी 2020 — राजपथ मथुरा

डा. अर्चना प्रिय को भारतसेवा रत्न सम्मान

मथुरा।(राजपथ मथुरा ब्यूरो)। भारत सेवा न्यास द्वारा अपने द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य को समाज सेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए भारत सेवा रत्न 2020 की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आभार जताते हुए डा. आर्य ने कहा कि भारत की सेवा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जो व्यक्ति जहां भी कार्य करता है यदि वहां वह ईमानदारी व निष्ठा से उस कार्य को सम्पन्न करे तो इससे बड़ी देश सेवा और कोई नहीं हो सकती है।

महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा.अर्चना प्रिय आर्य समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या व दहेज के साथ युवाओं में तेजी से घट रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करने के लिए 25 वर्ष से कार्य कर रही है। इससे पूर्व भी उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में भारत सेवा न्यास के संरक्षक रणवीर सिंह पाण्डव, अध्यक्ष मानवेन्द्र पाण्डव, पूर्व विधायक हुकुम चंद तिवारी, कवि डा. रमाशंकर पाण्डेय, डा. शिवराज भारद्वाज,बार एसो. के पूर्व अध्यक्ष इन्द्र कुमार वशिष्ठ, शिक्षाविद् आस्था भारद्वाज, डा.सीमा मिश्रा, जगत प्रशांत अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

ब्रज गरिमा
16 जनवरी 2020

डा.अर्चना प्रिय आर्य को भारतसेवा रत्न सम्मान

मथुरा, भारत सेवा न्यास द्वारा अपने द्वितीय वार्षिकोत्सवके अवसरपर आयोजित संगोष्ठी में संस्कारजागृति मिशनकी अध्यक्ष डा.अर्चना प्रियआर्य कोसमाज सेवाके क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए भारतसेवा रत्न 2020 की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आभार जताते हुए डा. आर्य ने कहा कि भारत की सेवा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जो व्यक्ति जहां भी कार्य करता है, यदि वहां वह ईमानदारी व निष्ठा से उस कार्य को सम्पन्न करे तो इससे बड़ी देश सेवा और कोई नहीं हो सकती है।

महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा.अर्चना प्रिय आर्य समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या व दहेज के साथ युवाओं में तेजी से घट रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करने के लिए 25 वर्ष से कार्य कर रहीं है। इससे पूर्व भी उन्हें अनेकसंस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में भारत सेवा न्यास के संरक्षक रणवीर सिंह पाण्डव, अध्यक्ष मानवेन्द्र पाण्डव, पूर्व विधायक हुकुम चंद तिवारी, कवि डा.रमाशंकर पाण्डेय, डा. शिवराज भारद्वाज, बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष इन्द्र कुमार वशिष्ठ, शिक्षाविद् आस्था भारद्वाज, डा.सीमा मिश्रा, जगत प्रशांत अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान
गुरुवार • 16 जनवरी 2020 •

आर्यो ने किया यज्ञ

संस्कार जागृति मिशन सदस्यों ने ताराधाम कालोनी में मंत्रोच्चारण के मध्य यज्ञ किया। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में पदाधिकारियों ने आहुति दी। अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति में प्रत्येक पर्व यज्ञ से मनाए जाते हैं। यज्ञ सभी घरों में प्रतिष्ठित करना चाहिए। इस अवसर पर रेवड़ी व गुड़ का प्रसाद बांटा गया। विवेक प्रिय आर्य, लाल सिंह आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य, उत्कर्ष प्रताप मौजूद थे।

हिन्दुस्तान • शुक्रवार • 17 जनवरी 2020

अर्चना प्रिय को भारत सेवा रत्न सम्मान

मथुरा। भारत सेवा न्यास के द्वितीय वार्षिकोत्सव पर संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्षा डा.अर्चना प्रिय आर्य को सराहनीय सामाजिक कार्यों के लिए भारत सेवा रत्न से सम्मानित किया गया है। इससे पहले भी उन्हें कई बार सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में न्यास के संरक्षक रणवीर सिंह पांडव, अध्यक्ष मानवेन्द्र पांडव, पूर्व विधायक हुकुम चंद तिवारी, कवि डा. रमाशंकर पाण्डेय, डा. शिवराज भारद्वाज, बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष इन्द्रकुमार वशिष्ठ, आस्था भारद्वाज, डा. सीमा मिश्रा, जगत प्रशांत अग्रवाल आदि रहे।

छोटी सी बात

संक्रांति पर्व पर किया यज्ञ

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालय पर मकर संक्रांति का पर्व यज्ञ कर मनाया गया।

मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में पदाधिकारियों द्वारा आहुति दी गयी। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति में प्रत्येक पर्व यज्ञ से मनाए जाते हैं। यज्ञ सभी घरों में प्रतिष्ठित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के पर्व पर सेवाभाव, संगठन और दान का संकल्प लेना चाहिए और अंहकार, स्वार्थ और पणता को त्याग देना चाहिए। उन्होंने कहा कि मकर संक्रांति को ही परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया था। कार्यक्रम में विवेक प्रिय आर्य, लाल सिंह आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य, उत्कर्ष प्रताप आदि मौजूद रहे।

ब्रज गरिमा
16 जनवरी 2020

डा.अर्चना प्रिय आर्य को भारतसेवा रत्न सम्मान

राजपथ मथुरा 15 जनवरी 2020

मकर संक्रांति पर्व पर किया यज्ञ

मथुरा। (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालय पर मकर संक्रांति का पर्व यज्ञ कर मनाया गया। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में पदाधिकारियों द्वारा आहुति दी गयी। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति में प्रत्येक पर्व यज्ञ से मनाए जाते हैं। यज्ञ सभी घरों में प्रतिष्ठित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के पर्व पर सेवाभाव, संगठन और दान का संकल्प लेना चाहिए और अंहकार, स्वार्थ और कृपणता को त्याग देना चाहिए। उन्होंने कहा कि मकर संक्रांति को ही परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया था। इस दौरान यज्ञ में उपस्थितजनों को रेवड़ी व गुड़ का प्रसाद वितरण किया गया।
कार्यक्रम में विवेक प्रिय आर्य, लाल सिंह आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य, उत्कर्ष प्रताप आदि मौजूद रहे।

2 **यूनिक समय**
मथुरा, रविवार, 12 जनवरी 2020

शख्सियत

लड़कियों के लिए आईकॉन बनी डॉ. अर्चना

-प्रमुख संवाददाता

यूनिक समय, मथुरा। गांव–गांव जाकर दिशाहीन युवा, संस्कार विहीन बच्चों को सही राह दिखाने का कार्य कर रही हैं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य। महिला के शोषण, कन्या भ्रूण हत्या दहेज और बलात्कार जैसी घटनाओं के खिलाफ भी अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं डॉ.आर्य। संस्कृति एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने को डॉ.आर्य ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डॉ.आर्य गांव–गांव व शहर–शहर जाकर अपनी बुलंद आवाज को मधुर भजन व कथा के माध्यम से लोगों को जागृत करने का कार्य कर रही हैं। जिससे युवा अपने रास्ते से न भटकें और वह गलत राह पर न जायें।

> दिशाहीन युवाओं को सही राह दिखाने का कार्य कर रहीं हैं

बचपन से ही था समाजसेवा करने का जज्बा

डॉ.आर्य को बचपन से ही गलत देखना बर्दाश्त नहीं था। जब भी वह समाज में कुछ गलत होता देखती थीं। तभी विरोधी करना शुरू कर देती थीं। उन्होंने बचपन से अपनी संस्कृति का प्रचार–प्रसार करना शुरू कर दिया था। महज 10 वर्ष की उम्र में ही भजन के माध्यम से लोगों को समझाना शुरू कर दिया था। अपने साथ अपनी छोटी बहन को भी यही सब सिखाया।

यज्ञ के लिए करतीं हैं प्रेरित

डॉ.आर्य का प्रमुख उद्देश्य है जो युवा पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आते जा रहे उन्हें भारतीय संस्कृति से जोड़ना। उनका कहना है कि सभी लोग खासकर जो युवा हैं वह अपना जन्मदिन या किसी भी खुशी के अवसर पर यज्ञ करें जिससे वातावरण भी शुद्ध हो और आगे आने वाली पीढ़ी भी इससे पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

शिविर, संगोष्ठी, कथा व समागम से करती है जागरूक

डॉ. आर्य अनेक विद्यालयों व महाविद्यालयों में शिविर व संगोष्ठी आयोजित कर बच्चों को भारतीय संस्कारों की पुण्य परम्परा से अवगत कराती हैं। इसके साथ ही यज्ञ का प्रशिक्षण भी देती हैं। इसके अलावा बच्चों के अभिभावकों को जागरूक करने के लिये संस्कार समागम, भगवान श्रीरामकथा, भगवती सीता चरित कथा, राष्ट्र कथा और भजनोपदेश का भी आयोजन अनेक शहरों व गांवों में इनके द्वारा किये जाते हैं।

यहां से मिली प्रेरणा

डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के दादा–दादी व पिता हैदराबाद में निजाम के खिलाफ, गौ रक्षा व हिंदी रक्षा आंदोलनों में भाग ले चुके हैं। वर्ष 1996 में अपने गांव में ही आर्य समाज के द्वारा एक जलसा किया गया था, जिसमें आये विद्वानों से प्रभावित होकर ही उन्होंने यह संकल्प किया कि वह भी इस समाज सुधार के अभियान को आगे बढ़ायेंगी। पिता आचार्य सत्यप्रिय आर्य व माता श्रीमती सरोज रानी आर्य ने इनको संबल प्रदान किया। फिर क्या था मात्र 10 वर्ष की आयु में ही इन्होंने छोटी बहिन वंदना प्रिय आर्य के साथ जन जागरण का अभियान शुरू किया।

> संस्कृति एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुन:स्थापित करने का संकल्प

संस्कृत से की डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (पीएचडी)

डॉ. अर्चना प्रिय आर्य की प्रारंभिक शिक्षा इनके प्रारंभिक शिक्षा गांव ऊंचागांव में ही हुई लेकिन बाद में उच्च शिक्षा के लिए मथुरा आयीं और यहां से संस्कृत और हिंदी में परास्नातक, बी.एड. तथा सन 2013 में डा.भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय से संस्कारों के विषय पर शोध किया। जिसके बाद इनका सरकारी सेवा में भी चयन हुआ परंतु इन्होंने इसे ठुकरा दिया और अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा।

लक्ष्य बच्चों को संस्कारित करने का

डॉ. आर्य अपनी संस्कृति व संस्कारों को पुनः समाज में प्रतिष्ठित करना चाहती हैं। इसके लिए वह लगातार अपने कार्य को गति दे रही हैं। उनका लक्ष्य एक ऐसे मंदिर निर्माण का है जिसमें बच्चों को संस्कारित किया जा सके, अभिभावक बच्चों के प्रति कैसे सचेत रहें यह सिखाया जा सके, बच्चों को अपने संस्कार, संस्कृति और सभ्यता का परिचय कराया जा सके।

संगीत की शिक्षा गांव के ही सूरदास कवि गुलाब सिंह आजाद से तथा भाषण कला अपने पिता से प्राप्त की।

नई पीढ़ी के भटकाव से चिंतित

डॉ. अर्चना प्रिय इस बात से चिंतित हैं कि नई पीढ़ी में भटकाव आ गया है। उनका दावा है कि उनके द्वारा उठाये गये इस कदम से बदलाव अवश्य आयेगा। उनका मानना है कि नई पीढ़ी में भटकाव तभी रूक सकेगा जब बच्चों के साथ–साथ मां–बाप को भी अपनी जिम्मेदारियां समझनी होंगी और बच्चों को संस्कारित करने के लिए सचेत रहना होगा।

समाज को संदेश

डॉ. अर्चना प्रिय आर्य कहती हैं कि इस देश को एक नई पहचान देने के लिये हमें पश्चिमी सभ्यता त्यागनी होगी और अपनी भारतीय संस्कृति को पूर्ण रूप से अपनाना होगा। सभी परिवारों में बच्चों को भारतीय परंपरा का पाठ पढ़ाना होगा।

02 सितम्बर 2019 | राजपथ मथुरा

युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटीं डा. अर्चना प्रिय

विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने को चला रहीं है अभियान, देश के प्रत्येक कोने तक पहुंचा रहीं है अपनी अवाज

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को बचाने के लिए दिन-रात मेहनतरत महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में तेजी से बड रहे नशाखोरी एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने के लिए एक अभियान चला रही हैं। आने वाले पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटी अर्चना इस बात से चिंतित हैं कि नई पीढ़ी में भटकाव आ गया है।

उनका दावा है कि उनके द्वारा उठाये गये इस कदम से बदलाव अवश्य आयेगा। उनके द्वारा बुलंद आवाज में कही गयी बात व मधुर स्वर में गाये गये गीतों से लोगों तक उनकी बात पहुंचती है। डा. अर्चना प्रिय आर्य ने समाज सुधार व जन जागरण के क्षेत्र में एक बहुत बडा मुकाम हासिल किया है। डा. अर्चना बताती हैं कि लगभग 25 वर्ष पूर्व मेरे पैतृक गांव ऊंचागांव (हाथरस) में आर्य समाज द्वारा एक जालसा किया गया था जिसमें आये विद्वानों से प्रभावित होकर ही उन्होंने यह संकल्प किया कि वह भी इस समाज सुधार के अभियान को आगे बढ़ायेंगी। इसी संकल्प के साथ वह अपनी छोटी बहिन वंदना प्रिय आर्य के साथ अपनी संस्कृति व संस्कारों से भटक रहे युवाओं को पुनः संस्कारित करने में जुट गई और संस्कार जागृति मिशन की स्थापना कर अपने संकल्प की पूर्ति में लग गयीं।

अब गांव ही नहीं पूरे देश में जहां भी जाती हैं, वहां की लडकियों की वह आइकोन बन गई हैं। अब अपनी बेटियों को समाज सुधार के क्षेत्र में भेजने पर समाज आंख तरेर कर नहीं देखता। यह कोई नहीं कहता कि गांव-गांव घूमती हैं। समाज व गांव के जो लोग आंखें तरेरा करते थे आज वही लोग अपनी इस बेटी की उपलब्धि गिनाते फिरते हैं।

सभी देशवासियों को
संस्कार जागृति मिशन की ओर से बसंत पंचमी
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्काइब करें।